International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हरित क्रान्ति– एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. जगजीत सिंह कविया
व्याख्याता समाजशास्त्र
राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू

भारतीय कृषि के विकास को विभिन्न दृष्टिकोण से देखा जा सकता है संस्थागत वे तकनीकी संस्थागत तरीका मुख भूमि सुधारों में कृषि संबंधों में परिवर्तन से पहचाना जाता है जिसमें समतामूलक सामाजिक संरचना को केंद्र में रखकर भूमि संबंधों में शोषण तथा खेत जोतने वाले को भूमि प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं परंतु यह रणनीति परंपरागत संस्थाओं के अस्तित्व के चलते आंशिक सफलता ही प्राप्त कर सके इससे भी अधिक यह अनुभव किया गया कि कृषि के क्षेत्र में और अधिक विस्तार की संभावना के बगैर देश में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि का एकमात्र तरीका है वर्णन साठ के दशक में भारतीय कृषि में हुई तकनीकी परिवर्तनों ने भारत में हरित क्रांति को जन्म दिया जिसने कृषि उत्पादन उत्पादकता को निर्णायक रूप से प्रभावित किया।

यह वह दौर था जब प्रभावशाली भूमि सुधार के अभाव में कृषि योग्य भूमि पर मुट्ठी भर लोगों का नियंत्रण कायम था वही 60 के दशक में लगातार दो खराब मानसून वजह से भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो गई परिणाम स्वरूप खाद्यान्नों की आपूर्ति के लिए अमेरिका से खाद्यान्नों का आयात किया गया जिसने भारत को सहायता के बदले अंतरराष्ट्रीय एजेंसी वजह से विश्व बैंक की कठोर शर्तों का पालन करने के लिए बाद होना पड़ा इन्हीं भारी दबाव के कारण एक घरेलू आर्थिक नीतियों का समायोजन करना पड़ा जिनमें जून 1966 में रुपए का अवमूल्यन शामिल था कृषि में कमजोर प्रदर्शन का उद्योग पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा गया अर्थव्यवस्था की समाज उन्नति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा इन समस्याओं की प्रक्रिया के रूप में जो रणनीति उत्पन्न हुई वही हरित क्रांति कहलाए।

हरित क्रांति की अवधारणा –

हरित क्रांति शब्द का उल्लेख कृषि विशेषज्ञ दल द्वारा साठ के दशक के दौरान विकसित नई कृषि प्रौद्योगिकी के लिए किया गया है इस दल में मेक्सिको में अंतर्राष्ट्रीय मक्का और गेहूं सुधार केंद्र और फिलीपींस में अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के कृषि विशेषज्ञ इन दो केंद्रों में विकसित प्रौद्योगिकी कबाड़ में एशिया और लैटिन अमेरिका के अधिकांश विकासशील देशों द्वारा बनाए गए ताकि इन देशों में खाद्यान्न और निर्भरता प्राप्त करने तथा को सुधार करने में योगदान हो सके गोदी में अधिक पैदावार वाली किस्म के बीजों का प्रयोग और आधुनिक निवेशकों और प्रणालियों जैसे रासायनिक उर्वरकों कीटनाशकों और नियंत्रित विद्युत और डीजल पंपू आदि का पैकेज अंतर्निहित है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यद्यपि पर में नई कृषि रणनीति मुक्ता गेहूं और चावल की फसल तक सीमित थी बाद में अन्य फसलों के लिए भी इसका विस्तार किया गया यह प्रणाली ऑन परंपरागत कैसे प्रणालियों की स्थान पर प्रारंभ की गई जो अधिकांश किसानों को अपने स्वामित्व के आधार नो और संसाधनों पर आधारित है जैसे देसी बीज खेत में बने खाद हाथ से सिंचाई रहे थे का प्रयोग देशी बीजों की समस्या यह थी कि उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक की अधिक मात्रा बर्दाश्त नहीं कर पाते थे जबकि रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई के संयोजन में उन्हें अधिक उत्पादकता दी हरित क्रांति शब्द के अंडे द्वारा की गई थी उन्होंने 1968 में एशिया और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों में उपयोगिता का वर्णन करने के लिए शब्द का प्रयोग किया।

ऐतिहासिक संदर्भ –

हरित क्रांति की प्रक्रिया डॉक्टर नॉर्मन बोरलॉग सहित रॉकफेलर फाउंडेशन के कृषि विशेषज्ञों की टीम द्वारा मेक्सिको होने से 50 के दशक के प्रारंभ में कृषि अनुसंधान कार्यक्रम के परिवर्तन से आरंभ हुई डालता नॉर्मन बोरलॉग ने मैक्सिकन गेहूं पर अध्ययन अनुसंधान किया और वे 1950 के दशक के मध्य में अधिक पैदावार देने वाली दोनों ने गेहूं की किस्मों का आविष्कार करने में सफल हुए गेहूं के एच वाई वी बीजों के प्रयोग से मेक्सिको 1960 के दशक के प्रारंभ गेहूं उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया यहां तक कि उसने निर्णय करना भी आरंभ किया बाद में चावल की फसल की बीज विकसित करने के लिए फिलीपींस में उन्हें सहायता की अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान आईएआरआई स्थापित किया गया था आई आर आर द्वारा विकसित चावल की अधिक उत्पादकता बढ़ाई है मेक्सिको गेहूं की बहुत ही चावल बीज भी राजधानी पूरे को सिंचाई के प्रयोग के प्रति अधिक अनुक्रिया शीलता इन दोनों देशों ने भारत सहित अधिकांश विकासशील देशों में हरित क्रांति प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया वह लोग को कृषि विकास में उसके उस योगदान और उस समय की विश्व खाद्य समस्या हल करने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था जैसा कूपन लेके गया है भारत में उनसे 50 और 60 के दशक में गंभीर कमी का सामना करना पड़ा और खाद्यान्न का आयात करना पड़ा भारत खाद्यान्न की कमी जल्दी से जल्दी पूरा करने के लिए बेचौन था परिणाम स्वरूप फोर्ड फाउंडेशन के कृषि विशेषज्ञों से दिल की सिफारिश पर भारत में कृषि की दृष्टि से विकसित चुनिंदा क्षेत्रों में अधिक वादन विशेषकर गेहूं और चावल आदि पैदा करने के लिए कृषि रणनीति अपनाई 1960 के दशक में कोई फाउंडेशन ने भारत सरकार की स्वीकृति से कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए बेहतर पौधों की कुत्तादन से गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम आईएएएपी प्रारंभ किया उन क्षेत्रों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने पर बल दिया गया था जहां कृषि विकास की संभावना अधिक थी ताकि खादर उत्पादन में त्वरित वृद्धि प्राप्त की जा सके इन जिनेंद्र क्षेत्र में खाद्य उत्पादन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बढ़ाने में प्रभावकारी सिद्ध हुआ के आशा प्रणाम तथा अधिक खाद्यान्न के लिए बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखते हुए सरकार ने 1965 के दौरान के उन चुनिंदा 114 जिलों में गहन कृषि जिला कार्यक्रम आईएडीपी गर्म किया जहां कृषि विकास की संभावना बहुत अधिक टी आई ए टी आर आई ई डी पी दोनों आर्थिक विकास के बड़े–बड़े सिद्धांत पर आधारित है यह दोनों कार्यक्रम भारत में हरित क्रांति प्राप्त करने की दिशा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कदम से दूर डॉक्टर नॉर्मल वह लोग और डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन कृषि वैज्ञानिक तथ्य सुब्रमण्यम तत्कालीन कृषि मंत्री भारत में नई कृषि प्रौद्योगिकी लाने में महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे नई रणनीति का उद्देश्य किसानों को आवश्यक और सेवाओं की तो सुलभता प्रदान कर खदान में आत्मनिर्भर तक प्राप्त करना था।

हरित क्रांति के मुख्य विशेषताएं –

एच वाई वी की मुख्य विशेषताओं में एक यह कि उनकी परिपक्वता की अवधि बहुत कम थी जिससे किसानों को वर्ष में कई फसलें उगाने के अवसर मिले इस प्रकार जीआर प्रौद्योगिकी फसल सघनता बढ़ाने में सहायता हुई थी और प्रौद्योगिकी के अधीन उत्पादन स्तर स्तर और फसल गहनता ने इसे भूमि बचत प्रौद्योगिकी बनाना परंतु अगली फसल के लिए भूमि खाली करने के लिए किसानों को समय पर फसल कटाई अगली फसल के लिए भूमि तैयार करने सहित विभिन्न फार्म क्रियाएं करने की आवश्यकता होती है इसके लिए आज अनुसार मशीनों जैसे ट्रैक्टरों थ्रेसर ओ सिंचाई पंपों अधिक विभिन्न निर्माण में अधिक विनिवेश आकर्षित करने तथा छोटे कस्बों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बैकिंग और विपणन ढांचागत सुविधाएं स्थापित करने में भी सहायता हुई संक्षेप में एचआईवी बीच रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग आधुनिक मशीनों का अनुप्रयोग विस्तृत सुविधाएं उन्नत ऋण सुविधाएं समर्थन मूल्य नीति और उन्नत अनुसंधान और विकास तथा विस्तार तथा आधारभूत संरचना भारत में हरित क्रांति आंदोलन की मुख्य विशेषताओं के रूप में उल्लेखनीय है।

हरित क्रांति का प्रभाव –

सकारात्मक प्रभाव क्षेत्र में 4 रोगी की फसलों के विशेषकर गेहूं और चावल के उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने मोटे धान से से धान में शशि क्रम बदलने और बाद में गन्ना और बागवानी फसलों सहित नगदी फसलें बोने और करने में सहायक हुआ।

खदानों के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि –

जी आर के परिणाम स्वरुप खाद्यान्नों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है 1965 सियासत में 72 पॉइंट 4 मिलियन टन से बढ़कर 19 7879 में 131 पॉइंट 9 मिलीयन तन हुआ इससे भारत विश्व का सबसे बड़ा कृषि उत्पादकों में गिना गया खदानों के प्रति हेक्टेयर उत्पादन उसमें 66 में 6 पॉइंट 3 क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी जो बढ़कर 5979 में 10 वोट दो हो गई सिंचाई के अधीन कुल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खाद्यान्न का प्रतिशत भी 1966 से 20.9 से 59 दिन में 8 व उत्पादकता वृद्धि उसे भारत उस समय के दौरान खदानों का निर्यातक बनने में सक्षम हुआ।

भारत में 1 से 50 51 से 2009 10जी के गेहूं फसल का उत्पादन और उपज में प्रवृतियां देखी है स्पष्ट है कि गेहूं का उत्पादन हरित क्रांति की अवधि के दौरान और उसके बाद उल्लेखनीय ढंग से बड़ा है उत्पादन 1965 66100 मिलियन टर्न से 1979 में 5 और 2010 में 80.7 एमटी बड़ा है उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि उसके प्रति हेक्टेयर उपज में भारी वृद्धि थी जो 1978 79 में 15.7 और आगे 2009–10 में 28.3 हुई हरित क्रांति के दौरान और उसके बाद की अवधि यों के दौरान भी गेहूं के अधीन क्षेत्रफल में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

चावल के छेद पर उत्पादन और उपज में भी हरित क्रांति के दौरान और उसके बाद उल्लेखनीय वृद्धि हुई उत्पादन 1965 66 में 30 पॉइंट 6 एमटी से बढ़कर 19 78 79 में 53.8 एमटी और आगे 2009–10 में 89.1 एमटी पहुंचा।

अवधि	गेहू			चावल		
	क्षेत्रफल	उत्पादन	उपज	क्षेत्रफल	उत्पादन	उपज
1950–51 से 1964–65 हरित क्रांति पूर्व अवधि	2.7*	4.3*	1.5*	1.5*	4.4*	2.9*
1967–68 से 1978–79 हरित क्रांति अवधि	3.3*	5.9*	2.5*	0.8*	2.6*	1.7*
1979–80 से 1990–91 हरित क्रांति उत्तर अवधि	0.6*	4.2*	3.6*	0.6*	4.3*	3.7*
1991–92 से 2009–10 आर्थिक सुधार पश्च अवधि	0.7*	1.7*	0.9*	0.1*	1.2*	1.1*

नोट – (*) और (**) क्रमशः 1 प्रतिशत और 05 प्रतिशत स्तर पर महत्व दर्शाते है।

रोजगार सृजन –

जो दोगी की और बेहतर निवेश में विनिर्माण और सेवा सेक्टरों की कृषि कृषि क्षेत्र में रोजगार के महत्वपूर्ण अवसर उत्पन्न किए हैं इसके अलावा शिक्षाएं जिसे तकनीकों के अभिकरण के लिए पूर्व शर्त माना गया था के विस्तार ने अधिक रोजगार पैदा किए हैं क्योंकि असिंचित की तुलना में सिंचित फसलों में अधिक कृषि कार्य होते हैं वास्तव में हरित क्रांति क्षेत्र जैसे पंजाब हरियाणा और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पश्चिमी उत्तर प्रदेश ने बड़ी समस्या में एक कृषि श्रमिकों की कमी की समस्या का अनुभव किया इसके परिणाम स्वरूप पिछड़े और गरीब कृषि क्षेत्रों से कृषि रोजगार के लिए श्रमिकों का प्रवचन जिया क्षेत्रों में हुआ।

कृषि में सार्वजनिक निजी निवेश का प्रोग्राम –

नलकूप प्रौद्योगिकी के आविष्कार ने विशेष रूप से सिंधु गंगा बेसिन में प्रति हेक्टर फसल उपज बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है नई कृषि नीति के लिए कृषि अनुसंधान विस्तार बिजली सड़कों सिंचाई में निवेश सहित कृषि आधारभूत संरचना में सर्वाधिक निवेश आवश्यक है भारत सरकार ने उन क्षेत्रों में कृषि में बाहरी सार्वजनिक निवेश किया जहां नई रणनीति अपनाई गई थी इस निवेश से कृषि में भी निजी निवेश की गति तेज करने पर अनुकूल प्रभाव हुआ किसानों ने नलकूप ट्रैक्टर और उसके उपकरणों बिजली और डीजल पंपसेट ओ भूमि समतल अन और विकास आदि में निवेश किया।

भूमि बचत –

भूमि सीमित संसाधनों जनसंख्या शहरीकरण और औद्योगीकरण कितनी वृद्धि के कारण कृषि विस्तार योजनाओं के लिए भूमि की मांग यंत्र बढ़ती जा रही है इस संदर्भ में जी और प्रौद्योगिकी क्यों भूमि बचाओ माना गया है क्योंकि इसमें विभिन्न कृषि फसलों की प्रति हेक्टेयर उपज सार्थक रूप से बढ़ाई है कृषि उत्पादकता वृद्धि ने अप्रत्यक्ष रूप से वन भूमि को भी बताया है।

ग्रामीण कृषि पर अर्थव्यवस्था पर प्रभाव –

हरित क्रांति ने ग्रामीण प्रसिद्ध और अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया इसके परिणाम स्वरूप भूमि से प्रति ला में पर्याप्त वृद्धि हुई है इससे किसानों की आय में वृद्धि हुई क्योंकि ग्रामीण समुदाय का बहुत बड़ा बड़ा कृषि श्रमिक और किसानों को होता है इसलिए कृषि विकास के कारण उनकी आय में वृद्धि स्थानीय रूप से उत्पादित माल और सेवाओं की मांग बढ़ाता है इस प्रकार कृषि पर सेवाओं में रोजगार और आय में वृद्धि होती है इसके अलावा फार्म और और मशीनों की मरम्मत और अनुरक्षण परिवहन और विपणन एवं कृषि संसाधनों की मां के विस्तार से कृषि कार्य में लगे ग्रामीण परिवार में अतिरिक्त आय और रोजगार सृजित होता है।

नकारात्मक प्रभाव –

भारत में हरित क्रांति ने नई नकारात्मक रॉबी उत्पन्न किए हैं क्योंकि जी और प्रौद्योगिकी अपनी अंत निर्मित आसमान सुलभता और क्षेत्र के असंतुलित विकास की विशेषता के साथ सवाल पर संभल की रणनीति पर आधारित है इसलिए इस क्षेत्र और फार्म की श्रेणियों के कृषि विकास में असमानता पैदा की है किसी भी प्रकार के फेरबदल के बिना और जल उर्वरक और कीटनाशक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दवाओं का भी प्रयोग कर उसी भूमि पर गेहूं या चावल की दो या तीन भी फसलें उगाने की प्रवृत्ति भी देखी गई है इसमें मृदा उर्वरता और जल की मात्रा गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ा है
हरित क्रांति के प्रतिकूल प्रभाव निम्न है –

मृदा उर्वरता में हास –

जीआर प्रौद्योगिकी ने मृदा उर्वरता में गुण हाउस उत्पन्न किया है प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन भारत सरकार 27 पर कार्य दल की रिपोर्ट के अनुसार 1980 के और 1990 के दशकों के दौरान मृदा कोटि निम्नीकरण के कारण अनुमानित हानि जीडीपी के 11 से 20: तक हुई विश्वसनीय और मृदा परीक्षण सुविधाओं के अभाव के कारण अंधाधुन और हानिकारक रसायनों का प्रयोग हुआ है ग्रीनपीस इंडिया रिपोर्ट 2011 टिप्पणी की है कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हमारे नेता की हत्या कर रहा है और हमारी खाद्य सुरक्षा को संकट में डाल रहा है इनसे हटने और अपनी मृदा को परिस्थिति के तरीके से परिभाषित करने का यही नियम है।

जैव विविधता की क्षति –

ग्रामीण आजीविका को धार ने बनाए रखने और खाद सुरक्षा प्राप्त करने के लिए जय विविधता आवश्यक है परंतु एसवाईवी बीजों के प्रयोग ने उद्देश्य प्रजातियों पर आधारित कृषि कार्य प्रणाली बदल डाली जो पीढ़ियों के दौरान निर्मित हुई थी इसके कारण बहुत से महत्वपूर्ण जिनको सभी जन निवेदन सिलता बिगड़ते हुए जैव विविधता और कृषि जननी संसाधनों को क्षती हुई।

भोमजल संसाधनों का अवक्षय –

1990 के दशक में कूप जल प्रौद्योगिकी का विकास सिंधु गंगा प्रदेशों में हरित क्रांति लाने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक है परंतु इन चित्रों में नलकूपों की सिद्धांता की वृद्धि भी घूम जल संसाधनों के 3 वर्ष की मुख्य कारण रही है।

छोटे और सीमांत किसानो पर प्रभाव –

छोटे और सीमांत किसानों को महंगा एच वाई वी बीज उर्वरक और कीटनाशक दवाइयां खरीदनी पड़ती है जिनके लिए उन्हें अपेक्षाकृत अधिक ब्याज दर पर ऋण लेना पड़ता है और परिणाम स्वरुप भी ऋण के जाल में फंस जाते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कृषि में अति पूंजीकरण –

परंपरागत कृषि प्रधान अधिकांश से स्थानीय रूप से उपलब्ध कृषि आदान और औजारों जैसे फार्म में उगाए गए बीजों का से लोहे के हाल पशु जुताई खेत पर उत्पन्न खाद बैलगाड़ी और स्थानीय बढ़िया और लोहारों द्वारा बनाए गए अन्य कृषि औजारों पर आधारित अन्य व्यवसायों और औजारों को प्राप्त करने के लिए रुपयों की बहुत कम या कोई आवश्यकता नहीं होती थी क्योंकि उनमें से अधिकांश समय अपने होते थे या जजमानी प्रथा के अधीन किसानों द्वारा दिए जाने वाले गीत लाबो के बदले बढ़ाई और लोहार काम देते थे कृषि में उभरती हुई कार्यप्रणाली बहुत से क्षेत्रों में अधिक पूंजीकरण की ओर बढ़ रही है नई कृषि प्रौद्योगिकी के लिए आधुनिक फार्म मशीनें ट्रैक्टरों पंपसेट में भारी निवेश की आवश्यकता थी ट्रैक्टर और औजार तथा सिंचाई पंप खरीदने के कारण कृ षि में पूंजीकरण होता है कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित क्षेत्रों में जैसे पंजाब और पश्चिम उत्तर प्रदेश में कृषि में अति पूंजीकरण है।

असमानताओं में बढ़ोतरी –

जीआर प्रौद्योगिकी में क्षेत्रों और फार्म की श्रेणियों में समानताएं उत्पन्न की है क्योंकि यह सवाल पर संभल दृष्टिकोण पर आधारित है इसलिए समानता इसमें स्वभाविक थी नई प्रौद्योगिकी के लाभ कुछ ही फसलों जैसे गेहूं चावल गणना और कृषि की दृष्टि से विकसित हुए कुछ क्षेत्रों तक सीमित थे जहां सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएं थी अधिकांश फसलों और वर्षा प्रधान कृषि क्षेत्रों ने जीआर से पर्याप्त लाभ प्राप्त नहीं किए यह देखा गया है कि अधिकांश क्षेत्रों में जहां नई प्रौद्योगिकी अपनाई गई थी पहले से विकसित क्षेत्रों के किसानों ने अधिक लाभ प्राप्त किए अधिकांश से सबसे गरीब किसानों और अल्पतम विकसित क्षेत्रों में नहीं प्रारंभ में हरित क्रांति मुख्य रूप से उत्तर भारत में गेहूं की फसल तक सीमित रह गए इसके परिणाम यह हुआ कि देश के समग्र आर्थिक विकास में इसका योगदान भी सीमित रहा क्योंकि बीज उर्वरक प्रौद्योगिकी असिंचित और वर्षा प्रधान क्षेत्रों की कृषि के लिए उपयुक्त नहीं थी इसलिए क्षेत्रीय आंतों में काफी हद तक इसका योगदान रहा क्षेत्रों में जीआर का विस्तार अनुपयुक्त से दुआ और किसानों के लिए गंभीर विपत्ति का कारण बना जिन्होंने भोम जल संसाधनों पर आधारित शुष्क क्षेत्र में जीआर अपनाया हत4 दोगी कि ने उन ख्वाबों में प्रभाव का ढंग से कार्य किया जिनमें नियंत्रित उत्पादन वातावरण था जैसे अच्छी कोटि की मृदा बेहतर शिक्षा और बाजार सुविधाएं क्योंकि यह बात और कृषि की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में पर्याप्त रूप में उपलब्ध नहीं है इसलिए उन क्षेत्रों के किसान नई प्रौद्योगिकी से अधिक लाभ प्राप्त नहीं कर सके बल्कि उनकी प्रतिस्पर्धात्मक नष्ट हो गई और भी विकसित क्षेत्रों के अपने प्रति पक्षियों के मुकाबले अपेक्षाकृत अलार्म कर स्थिति में रहे हनुमंता ने निष्कर्ष निकाला है कि भारतीय कृषि में रोगी की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों के बीच छोटे और बड़े किसानों के बीज और भू स्वामियों तथा भूमिहीन श्रमिकों के बीच आर्थिक समानता है बढ़ाई।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण पर प्रभाव –

जैसे ही पहले उल्लेखनीय किया गया है जी और प्रौद्योगिकी के सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभावों में उसके परिस्थिति की और पर्यावरण प्रभाव प्रमुख है कृषि में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक दवाओं का अत्यधिक प्रयोग भूमि दुर्बलता की कमी का मुख्य स्रोत है इसमें सामान्यता जलीय जीवन और विशेष रूप से मत्तास उत्पादन प्रभावित करते हुए नदी जल संसाधनों को भी प्रदूषित किया है हाल ही के दशकों में उत्पादकता रुद्रा भी उस मृदा और जल संसाधनों के निम्नीकरण के कारण हुई है जो विशेषकर चावल गए और उत्तर भारत के राज्यों के गेहूं का उत्पादन से उत्पन्न हुआ है इसलिए उर्वरकों कीटनाशकों और खरपतवार नाशी यों के अत्यधिक प्रयोग से न केवल प्राकृतिक संसाधनों का निम्नीकरण वह बलि की उत्पादकता भी अवरुद्ध हुई है।

ऊर्जा समस्याएं –

हरित क्रांति से संबंधित एक अन्य समस्या जीवास ईंधन ऊर्जा स्रोतों पर उसकी अधिक निर्भरता है यह तर्क दिया जाता है कि ऊर्जा आधारित कृषि आदान ओं की लागत में वृद्धि के परिणाम स्वरूप कृषि उत्पादों की कीमतों में भी वृद्धि होती है इससे जीआर कार्यप्रणाली आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध पद है देखा गया है कि कृषि में मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल विद्युत खपत का अंत समय के चलते हुए बड़ा है डीजल आयात का डीजल आयत की अधिक उस्मान ने भारत के विदेशी मुद्रा भंडार पर भी बहुत दबाव रखा है।

निष्कर्ष :–

हरित क्रांति के संदर्भ में उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हरित क्रांति मूलतः कृषि के केंद्र उत्पादन संबंधों में आए गुणात्मक परिवर्तन को उत्पन्न करने वाली वह महत्वपूर्ण घटना रही है जिसने जहां एक और भारत को खदानों के क्षेत्र में नवीन तकनीक का प्रयोग कर खदानों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्रदान की व्यवसायिक एवं नकदी खेती के द्वारा किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत की भूमिहीन कृषकों को गांव में रोजगार प्रदान कर ग्रामीण परिवर्तन की दर को कम किया स्त्रियों को श्रम संबंधित क्रिया में प्रवेश दिलवाया वही इस क्रांति के कुछ नकारात्मक पक्ष लिया था गांव में बड़े भूस्वामी यों के रूप में नए मध्यम वर्ग का उदय जाति व्यवस्था में तनाव संघर्ष की स्थितियां श्री हुई है सामूहिक श्रम एवं संयुक्त परिवार के तत्व तेजी से भी गठित हो रहे हैं साथ ही कामों का परिवार एवं नातेदारी आधारित अनौपचारिक अंत व्यक्तिगत संबंधों का ताना–बाना निरंतर टूटता जा रहा है

इन्हीं नकारात्मक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए प्रभात पटनायक कहते हैं की हरित क्रांति ने गांव एवं नगरों के संबंधों को जटिलता प्रदान की है और इन दोनों के मध्य बाजार की शक्तियों की भूमिका प्रभावित हुई है साथ ही वे यह भी तर्क देते हैं कि हरित क्रांति ने प्रभु जाति तथा स्थानीय संस्करण प्रणाली को जटिलता प्रदान की है। हरित क्रांति से मूल रूप से मध्यम तथा बड़े किसान ही नई तकनीक का लाभ उठा सके इसका कारण यह था कि इसमें किया जाने वाला निवेश महंगा था जिनका वह छोटे एवं सीमांत किसान उठाने में उदय सक्षम नहीं थे जितने की बड़े किसान पंजाब जा मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में कृषि उपकरणों जैसे जी ट्रैवल क्रेशर के प्रयोग में सेवा प्रदान करने वाली जातियों के समूह को भी बेदखली की प्रक्रिया ने ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर परिवर्तन की गति को और भी बढ़ा दिया। हरित क्रांति के परिणाम स्वरूप विविधीकरण की प्रक्रिया को गति मिली परिणाम स्वरूप धनी अधिक धनी हो गए तथा के निर्धन पूर्व व्रत रहे या अधिक गरीब हो गए इसके साथ ही कृषि मजदूरी के भुगतान के तारीखों में बदलाव खदान के स्थान पर नगर भुगतान से अधिकतर ग्रामीण मजदूरी की आरती दशा खराब हो गई। इसी का परिणाम है कि गांव में गैर संस्थागत कृतियां यथा भ्रष्टाचार राजनीतिक अर्थ बाद हिंसा के प्रति संस्कृति के रूप में भूमि हारों एवं भूमिहीनों के मध्य तनाव जैसी पथ गामी प्रवृत्तियों को तृप्ता एवं जटिलता प्रदान की है यही कारण है कि हाल में दूसरी हरित क्रांति की आवश्यकता पर चर्चा प्रारंभ हो गई है जो कि अधिक समावेशी स्वरूप में अंतर प्रक्रिया के मुख्य घटकों के रूप में छोटे सीमांत कृषक हो और बढ़ता विधानसभा क्षेत्र सहित कृषि उत्पादकता बढ़ाने पर आग्रह करती हो।

संदर्भ पुस्तके

1. दीपांकर गुप्ता वेदर द इंडियन विलेज कल्चर एंड एग्रीकल्चर इन रूरल इंडिया ईपीडब्ल्यू फरवरी 19, 2005
2. Green – Revalution and Its impacts Mahesh V.Joshi, A.P.H Publication (1999)
3. Bandhu Das Sen – The Green Revalution in India A Perspectiive, Pub. Wiley (1974)
4. Vandana Shiva – The of Violence of Green Revolution Pub. University Press of Kentucky (2016)
5. M.S. Swamination – 50 Year of Green Revolution Pub. World Scientific Pub. Co. pvt. Ltd (2016)
6. ग्रामीण समाजशास्त्र – डॉ. जी.के. अग्रवाल, डॉ. एस.एस. पाण्डे, पब्लि. – साहित्य भवन पब्लिकेशर्स एण्ड हिस्ट्रीब्यूशन्स, आगरा (2020)